शास्त्रीय संगीत की पुरोधा "किशोरी अमोणकर"

गरिमा पंचोली
शोधार्थी (संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

डॉ संतोष पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर,
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

स्वर ईश्वर का रूप है, स्वर सनातन है, हमें उसके साथ जीना चाहिए। यह स्वानुभव की चीज है। स्वर को पहचानना होगा, उसका स्तर आध्यात्मिक होना चाहिए। संगीत साधना परम शक्तिमान की आराधना है। सगुण भक्ति से स्वर मूर्त होता है, उसकी मूर्ति साकार होती है । हमें वह लक्ष्य स्वरों के माध्यम से ही मिल सकता है। जब उस परम लक्ष्य सत्य की अनुभूति होती है, तब तानपुरे आदि की आवश्यकता ही नहीं रहती। इस स्थिति में उस परम शक्तिमान के साथ तादात्म्य स्थापित हो जाता है।

स्वर पुरोधा श्रीमति किशोरी अमोणकर के ये शब्द संगीत के प्रति जो उनका आत्मिक दृष्टिकोण हैं, उसे प्रकट करते हैं, जो कि मूल रुप से पूर्ण आध्यात्मिक हैं। श्रीमति अमोणकर का कहना यह है कि अगर लय, स्वर के साथ अलग अलग भाव समझ में आते हैं, तो हम उसके मूल भावों को प्रायः भूल जाते हैं। क्योंकि स्वरों के माध्यम से ही आनंद की अनुभूति होना बताया गया है। जब हमें अपनी आत्मा से ऐसी अनुभूति होगी, तब जाकर हम सही अर्थ में शास्त्रीय संगीतज्ञ कहे जायेंगे ऐसा किशोरी जी का मानना है।

श्रीमति किशोरी अमोणकर जो कि वर्तमान में जयपुर अतरौली घराने की मुख्य गायिका हैं, उनका कहना है कि दृष्संतों के जीवन से शिक्षा लेनी है। ऋषि मुनियों के ग्रंथों का अध्ययन करना है, मनन चिंतन करना है, शुष्क स्वर लगाने का कोई अर्थ नहीं है। शब्द के माध्यम से रस दिखाना आसान है, पर वही रस जब स्वरों के माध्यम से दिखाया जाये, तभी संगीत बनता है।

विदुषी किशोरी अमोणकर की सच्ची साधना का सच यही है कि वे आज 84 वर्ष की उम्र पार करने पर भी संगीत के लिए पूर्ण समर्पित हैं। उनकी आयु ने भले ही उनकी देह को कुछ थका दिया हो किन्तु इसी देह के कंठ से झरते राग स्वरों को अब भी उसी आनंदतापूर्वक अनुभव किया जाता है जहाँ पहुँचकर समाधि का अनुभव हम करते हैं।

संगीत कला की विलक्षण गायिका श्रीमति अमोणकर की मान्यता यही रही है कि यदि संगीत सीखना है तो हमें स्वर और लय का अंदाज आत्मसात् करना होगा। हमें यह भी समझना पड़ेगा कि लय में स्वर कहां तक है और स्वर में लय कहाँ पर है। स्वरों को संभालकर गाना ही ठीक प्रयोग है। इसी के द्वारा रस निष्पत्ति प्रायरू संभव है। परंतु आज के शिक्षार्थियों में ऐसा धैर्य नहीं के बराबर है। इसलिए संगीत की शिक्षा देने से पहले आप यह समझने का पूर्ण प्रयास करती थीं कि मुझे सिखाना क्या है और किस विषय की जानकरी प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी आया है। इसके लिए श्री अमोणकर अपने शिष्यों से पूर्ण रियाज करवाती थी और उससे पहले यह दोहा उन्हें सिखाती थी।

प्रथम सुर साधे जब होवत ज्ञान, तब अंधकार कर दिखावे।
षड्रराग छत्तीस रागिनीएतीन ग्राम, बाईस श्रुति कर ध्यावे॥

संगीत की इस गहराई के प्रति विदुषी किशोरी जी का यह कथन बहुत महत्वपूर्ण हैं और सही भी है कि षड्ज की साधना ही मुख्य है और रेगमपधनीस तो उसी कि विभिन्न ऊँचाईयाँ हैं। सरगम रियाज है, सरगम तो स्वरों को पहचानने के लिए है, गाने के लिए नहीं। स्वरों की आहट जानने के लिए भी आकार ही काम आते हैं। संगीत जितना अधिक प्रवाहमय रहेगा उसका गायन भी उतना ही प्रभावकारी सिद्ध होगा।

जीवन.परिचय –

नादोपासिका श्रीमति किशोरी अमोणकर का जन्म 10 अप्रैल 1931 को हुआ। बाल्यकाल से ही उन्होंने अपनी माता दिग्गज गायिका श्रीमति मोघूबाई कुर्डीकर से शिक्षा ग्रहण करना आरंभ कर दियाए जो उस्ताद अल्लादियां खाँ की शिष्या रहीं। फिर भी बालकृष्ण पर्वतकर और श्रीमोहनराव पालेकर से भी उन्होंने संगीत की शिक्षा प्राप्त की। 1957 में उनका प्रथम कार्यक्रम अमृतसर में हुआ। 1952 से ही वे रेडियो पर गा रही थी। ऋषियों के चिंतन और प्राचीन ग्रंथों की भक्त होते हुए भी श्रीमति किशोरी अमोणकर वास्तव में प्रगतिशील विचारों वाली साधिका है। उनकी मान्यता है कि घराना विशेष से चिपके रहना तथा अन्य घरानों की सुंदर चीजे लेने से शिष्य को रोकना संगीत के स्वस्थ विकास में बाधक है। नये प्रयोगों को करने के लिए वे सदैव तत्पर रहती हैं। इससे कईं मिश्रित प्रक्रिया भी होती है। उनके गायन में अद्भुत अभिव्यंजना शक्ति है और श्रोताओं पर उसका जादू सा प्रभाव पड़ता है। वे अपने संगीत के साथ एकरुप होकर गायन प्रस्तुत करती हैं और इसमें उनका समर्पण. भाव सम्पूर्ण है। आध्यात्मिक चिन्तन उनका अपना वैशिष्ट्य है। कल्पनाशीलता और सृजनात्मक क्षमता उन्हें विशिष्ट श्रेणी में ला खड़ा करती है। अपनी माता से प्राप्त शास्त्रीय परम्परा का निर्वाह करते हुए भी श्रीमति अमोणकर मराठी सुगम संगीत और हिन्दी फिल्म संगीत कि ओर भी आकृष्ट हुईं। शास्त्रीय संगीत के दायरे के बाहर उनके गायन में भावनात्मक पक्ष खूब उभरा। मीराबाई के भजनों का उनका रिकॉर्ड वास्तव में श्रोताओं के मन में भक्ति भाव जागृत करने में समर्थ है। उनके स्वर.लगाव से ही श्रोता को अनुभव होने लगता है कि वह वजनदार स्वर

उनकी आंतरिक अनुभूति के आवेग से उद्‌भूत है। आलाप बोल आलाप, बोल तान, फिरत आदि ऐसे पुष्पहार की सृष्टि करते हैं जो नादब्रह्मा को समर्पण करने के लिए गूँथा जाता है। उनके सशक्त गायन का आज आसानी से मिलना मुश्किल है।

"भोपाल में श्री किशोरी अमोणकर ने अपने एक भाषण में कहा कि संगीत में हमारा गुरु हमें इस कला के विधिवत् अनुशासन की शिक्षा देता है वह हमें सिखाता है कि हम कैसे अपने गायन या वादन को सौंन्दर्यात्मक रुप दे सकें। उसके मार्गदर्शन और अपनी साधना से हम कला के इस माध्यम पर अधिकार प्राप्त करते हैं। मेरी भी शिक्षा यहीं से शुरु हुई थी और में तब से श्रृंगार करुण आदि रसों को अधिक स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त करने के तरीकों की खोज कर रहीं हूँ।"

किशोरी जी के जीवन जीने का अंदाज बेहद सरल रहा है उन्हें खेलों में क्रिकेट बिल्कुल पसंद नहीं लेकिन वे टेबिल टेनिस की अपने समय की चौंपियन रह चुकी हैं। वे तेज धावक भी रही हैं रसोईघर में भी वे बेहद काम करना पसंद करती थी। चपाती सुडौल बने इस बात का खास ख्याल करती थीं व सब्जी को कलात्मक रुप से काटना उन्हें अच्छा लगता था। रंगोली बेहद सुंदर बनाती थीं। किशोरी अमोणकर को मध्यप्रदेश की चंदेरी कॉटन साड़ियां बेहद पसन्द थीं। जयपुरी कोटा भी खरीदा करती थीं। फेरेनहाइट परफ्यूम की महक से उनका गहरा ताल्लुक रहा करता था। लड्डू का जायका रोज लेती थी वे खुद बनाकर खिलाने में खुशी महसूस करती थीं । बागवानी का शौक भी बेहद था, वनस्पतियों से इतना लगाव रखती थीं उनसे रोज बातें करती थीं जब कभी मुंबई के घर से अन्य प्रवास पर जाती थीं तो पहले गमलों क्यारियों से विदा कहा करती थीं। स्वंय अपने हाथों से सुंदर व आकर्षक माला बनाती थीं और भगवान का संपूर्ण श्रृंगार करती थीं। शोलापुर के राघवेन्द्र स्वामी उनके आध्यात्मिक गुरु हैं। जिन्होंने उन्हें एक रात स्वप्न में दर्शन भी दिये गुरु कृपा को ही वे सर्वोपरि मानती थीं। किशोरी जी के पिता जी का निधन होने के वक्त वे मात्र छः साल की ही थीं, अपनी माँ की छत्र छाया में और उनके कठोर अनुशासन में ही उनकी परवरिश हुई। माँ श्रीमति मोघूबाई कुर्डीकर ने अपने गुरु किशोरी पर पूँजी स्वरुप न्यौंछावर कर दिया। उनकी माँ ने कठिन अनुशासन के साथ धीरज रखते हुए शुद्धतापूर्वक सुर को बरतने के और आत्मसात् करने के जो गुरुमंत्र दिये किशोरी जी ने पूरी निष्ठा व सम्मान के साथ उन्हें स्वीकारा।

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रतिष्ठित घरानों में से एक जयपुर. अतरौली घराने की शैली से उन्होंने नाता जोड़ा अपनी मौलिक संकल्पनाओं का एक सुरीला विन्यास तैयार किया और अपनी गायकी की अपनी एक निजी शैली का आविष्कार उन्होंने किया। किशोरी जी ने सदैव संगीत चिंतन की भी अपनी एक धारा प्रवाहित की है। उनके द्वारा की गई सृजनात्मक अभिव्यक्तियों और निष्कर्षों को संगीत जगत द्वारा प्रामाणिक तथा उपयोगी माना गया।

प्राप्त सम्मान व पुरस्कार

संगीत में इन सभी उपलब्धियों के लिए किशोरी अमोणकर जी को अनेक महत्वपूर्ण सम्मानों से विभूषित किया गया है, जिनमें पद्मविभूषण् सहित "संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार", श्रीमंत भारती तीर्थ महास्वामी द्वारा प्रदत्त गान.सरस्वती कि उपाधि दी गई, प्रेस कांउसिल ऑफ इण्डिया का "कला शिरोमणि सम्मान", "पंडित भीमसेन जोशी स्मृति सम्मान" और महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रदत्त "महाराष्ट्र.गौरव", सम्मान इनमें खास है। इसके अलावा मध्यप्रदेश सरकार की संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित राष्ट्रीय तानसेन सम्मान से भी इनको अलंकृत किया जा चुका है। भारत के लगभग सभी स्थापित समारोहों में अपना गायन प्रस्तुत तो किया ही तथा किशोरी जी पेरिस, अमेरिका, ब्रिटेन, बेल्जियम, स्वीटज़रलैण्ड और दुबई सहित दुनिया के अनेक देशों कि महफिलों में अपनी अद्वितीय गायकी द्वारा श्रोताओं को मुग्ध कर चुकी हैं। किशोरी जी द्वारा गायन की दर्जनों ऑडियो कैसेट्स, सीड़ीज और वीड़ियो रिकॉर्डिंग जारी किये जा चुके हैं। कुछ फिल्मों में इनके द्वारा पार्श्वगायन भी किया गया है लेकिन सिनेमा के लिए गाना उन्हें ज्यादा रास नहीं आया। किशोरी अमोणकर ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को हमारे समय में मान.महिमा से मंडित किया है। जयपुर.अतरौली संगीत के घराने की परम्परा को अपनी प्रयोगशील गायकी में महफूज़ रखा है। विरासत में उनको मिली बंदिशों को अनेक महफिलों में गाया व अपनी स्वर रचनाओं से संगीत के अद्‌भुत संज्ञान का एक स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

गायन शैली

किशोरी जी के गायकी की खासियतों को लेकर ही अगर सोचा जाए तो उनके गायन में आकार युक्त लगाव विशेष रुप से पाया जाता है। और आलाप, मींड़ काम, गमकतान पल्टे

आदि में भी "आकार में कहीं अंतर दिखाई नहीं देता। मंद्र, मध्य तार सप्तक में स्वरस्थान सहज ढ़ंग से तथा पहले ही" आकार से लगने चाहिए इसकी तरफ भी किशोरी जी पूर्ण रुप से ध्यान देती थीं। गायन का प्रारंभ करने के बाद "स्थायी पेश करने की कलात्मकता और उस हेतु चुनी हुई बढ़िया बंदिश भी हम उनकी गायकी में देखते ही हैं। इन सभी विशेषताओं को देखते हुए स्थायी भरने की कला में सुन्दर कल्पनाविलास सही सौंदर्यदृष्टि एवं रसिकता आदि का एक अनोखा मिलाप दिखाई देता है। "मध्यलय की छोटी छोटी आलापी में से तानक्रिया और उसी क्रम में बड़े ही आत्मविश्वास से तीव्र गति में तनायत शुरु करना और इसके होते हुए लय अंग का ख्याल करते हुए लय को छेद देती हुई गमकयुक्त तानें, ये उन्होंने अपनाई गायकी ढ़ंग कि विशेषताएं ये सभी मानो इस घराने की ही विशेषताएँ कहीं जा सकती हैं।" इसके अलावा आप सुगम संगीत, फिल्म संगीत तथा मीराबाई के भजन भी बड़ी ही सुन्दरता व कुशलतापूर्वक प्रस्तुत करती थीं।

अतः भारतीय संगीत की इस अद्‌भुत व विलक्षण गायिका को सम्पूर्ण संगीत जगत में प्रतिभा सम्पन्न, संगीत के प्रति पूर्ण समर्पित, कल्पनाशील, सत्य के प्रति आग्रही और नवसृजन में सक्षम माना जाता है।

भारतीय संगीत की यह दिव्य विभूति 3 अप्रैल 2017 को इस जगत से चली गई हैं, आज भले ही वह हमारे बीच नहीं रहीं परंतु अपनी संगीत की विरासत हमारे समक्ष छोड़ गईं। ऐसी अद्‌भुत कलाकारा को कोटि कोटि प्रणाम व नमन हैं।